दिनांक **30.07.2022**

प्रतिवेदन

प्रेमचंद-जयंती पर कथा-संवाद

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग में हिन्दी-विनाग द्वारा आज दिनांक **30.7.2022** को प्रेमचंद जयंती के उपलक्ष्य में प्रख्यात कथाकार श्री हरि भटनागर की उपस्थिति में कथा-संवाद **(**कहानी पाठ एवं बातचीत**)** का आयोजन किया गया।

कार्यकम का शुभारंभ सरस्वती वंदना से हुआ। विभाग के अध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने स्वागत उद्बोधन के साथ प्रेमचंद की साहित्यिक संवेदना पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा प्रेमचंद हमेशा शोषित-पीड़ित जन के पक्ष में खड़े होते नजर आते हैं। प्रेमचंद का साहित्य भारतीय समाज का दर्पण है। विभाग के प्राध्यापक डॉ. जय प्रकाश ने अतिथि वक्ता कथाकार हरि भटनागर का परिचय देते हुए उनकी प्रमुख कहानियों तथा उनके कथा-शिल्प का उल्लेख किया।

महाविद्यालय के प्राचार्य श्री एम.ए. सिध्दिकी ने प्रेमचंद जयंती पर कथा-संवाद के आयोजन के लिए बधाई दी। इस अवसर उन्होंने अपने संबोधन में कहा प्रेमचंद एक लेखक के रूप में साधारण-जन के बीच लोकप्रिय थे। उनकी पंच-परमेश्वर कहानी न्याय के लिए संघर्ष हमेशा याद की जाती रहेगी। अतिथि वक्ता श्री हरि भटनागर ने अपनी "घोसला" कहानी का पाठ किया। कहानी पाठ के बाद विद्यार्थियों तथा शोध छात्रों ने कहानी-कला तथा उनकी कहानियों के बारे में अनेक प्रश्न किये। श्री भटनागर ने इन प्रश्नों का बहुत ही सहज-सरल जवाब दिया। उन्होंने कहा- कहानी दुनिया को खुली आखों से देखने-समझने से बनती है। हम जिन्हें कमजोर समझते है, "संगठित होकर वे भी ताकतवर हो जाते हैं"। वह भी अन्याय का प्रतिरोध कर सकते है। उन्होंने कहानी लेखन के लिए सूक्ष्म दृष्टि तथा उपयुक्त भाषा के तलाश को आवश्यक बताया। उनके घोसला कहानी का मूल स्वर अस्तित्व की लड़ाई है। एक पक्षी अपने घोसला बचाने के लिए लड़ सकता है तो आदमी व्यवस्था की विद्रुपता के विरूध्द क्यों नही लड़ सकता?

कथा-संवाद का यह कार्यकम छात्र-छात्राओं के लिए ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायी रहा। इस कार्यक्रम में लगभग **150** विद्यार्थी तथा **25** शोधार्थियों ने भाग लिया। कार्यकम में नगर के साहित्यकार श्री शरद

कोकाश, श्री बुध्दिलाल पाल, श्री नासिर अहमद सिंकदर, डॉ. अम्बरीश त्रिपाठी, डॉ. दुर्गा शुक्ला विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यकम को सफल बनाने में विभाग के प्राध्यापक डॉ. बलजीत कौर, डॉ. कृष्णा चटर्जी का योगदान रहा। कार्यकम का संचालन डॉ. रजनीश उमरे ने तथा आभार प्रदर्शन प्रो. थानसिंह वर्मा ने किया।

प्राचार्य

शास.वि.या.ता. स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग (छ.ग.)

दिनांक **14/09/2022**

प्रतिवेदन

भाषा के माध्यम से ही अपनी संस्कृति और जीवन मूल्यों की रक्षा कर सकते है- डॉ. आर.एन. सिंह

हिन्दी भाषा के अध्ययन विद्यार्थी केवल परीक्षा पास होने के लिए करते है, उसके साहित्य में जो ज्ञान तथा मूल्य निहित है वे उस पर ध्यान नही देते इसलिए उनमें मूल्य चेतना का अभाव होता है। भाषा संस्कृति की संवाहक होती है हिन्दी भाषा का सांवर्धन कर हम अपनी संस्कृति तथा जीवन मूल्यों की रक्षा कर सकते है। उक्त विचार शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग में हिन्दी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य, डॉ. आर.एन. सिंह ने व्यक्त किये। उन्होने आगे कहां कि विद्यार्थी हिन्दी के साहित्य अध्ययन करें जिससे उसमे निहित ज्ञान चेतना से प्रेरणा प्राप्त कर सके। इस कार्यक्रम में छायावाद की कवयित्री महादेवी वर्मा तथा प्रगतिवाद के प्रमुख कवि गजानन माधव मुक्तिबोध का पुन्य स्मरण किया गया। विभाग के प्राध्यापक डॉ. थानसिंह वर्मा, मुक्तिबोध के पत्रकारिता साहित्य पर चर्चा करते हुए कहां कि मुक्तिबोध जी ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में देश और दुनिया की सामयिक समास्याओं, घटनाओं तथा राजनीतिक, सांस्कृतिक गतिविधियों पर लेख लिखकर समाज को सचेत किया। डॉ. जयप्रकाश साव ने 'राजभाषा के रूप में हिन्दी की हैसियत विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहां कि हिन्दी दिवस मनाकर भाषाओं के बीच

द्वन्द्व पैदा करते है। हिन्दी में आज भी नये ज्ञान विज्ञान का साहित्य न होना बड़े शर्म की बात है। अपनी भाषा को समुन्नत करने के लिए उसे ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति की दृष्टि से संक्षम बनाना होगा।

कार्यक्रम का आरंभ सरस्वती वंदना तथा महादेवी वर्मा एवं गजानन माधव मुक्तिबोध के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुआ। स्वागत उद्‌बोधन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने किया। उन्होने अपने उद्‌बोध में वैश्विक घरातल पर राजभाषा हिन्दी की स्थिति पर विस्तार से चर्चा की तथा मुक्तिबोध जी श्रद्‌धांजली अर्पित करते हुए उनकी एक कविता का पाठ किया। अक्षय कुमार चौरसिया, सोनल ताम्रकार, मिनाक्षी वैष्णव, मो. सारिक अहमद खान, मोनिका साहू तथा नितिश कुमार वर्मा ने कविता पाठ व आलेख पठ्न किया। कार्यक्रम में डॉ बलजीत कौर, डॉ. कृष्णा चटर्जी, डॉ. सरिता मिश्र, कु. प्रियंका यादव, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. जनैन्द्र दीवान और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे। कार्यक्रम संचालन डॉ. रजनीश उमरे ने तथा आभार प्रदर्शन डॉ. ओमकुमारी देवांगन ने किया ।

प्राचार्य

शास.वि.या.ता. स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग (छ.ग.)

दिनांक **12.10.2022**

प्रतिवेदन

कथा देखने और सुनने से पैदा होती है- शिवमूर्ति

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग में हिंदी विभाग के तत्वावधान में दिनांक 11 अक्टूबर 2022 को पूर्वान्ह 11 बजे विवेकानंद सभागार में देश के सुप्रसिद्ध कथाकार श्री शिवमूर्ति (लखनऊ) का कहानी पाठ तथा संवाद का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना तथा स्वागत गीत के साथ हुआ। विभाग की ओर से स्वागत भाषण वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ बलजीत कौर ने दिया। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा समय-समय पर विभिन्न विद्वानों को आमंत्रित कर उनका व्याख्यान, रचना पाठ तथा संवाद का कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन आयोजनों का उद्देश्य होता है कि विद्यार्थियों में साहित्य की समझ पैदा हो सके, उनमें रचनाशीलता तथा रचनादृष्टि का विकास हो सके। इस आयोजन में उपस्थित अंचल के कथाकार श्री कैलाश बनवासी ने शिवमूर्ति जी का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि शिवमूर्ति जी का यहां आना अवध के आकाश का छत्तीसगढ़ में छा जाना है। वे अवध की धरती, वहां की मिट्टी के साथ आए हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में स्त्रियों की दशा, टूटते बिखरते गांव, किसानों, मजदूरों, दलितों की विवशता तथा जिजीविषा के संघर्ष को चित्रित किया है। महाविद्यालय के प्राध्यापक एवं आलोचक डॉ जयप्रकाश ने कहा- अवध के साथ हमारी बोली बानी की समानता है इसलिए अवध की संस्कृति के प्रति लगाव है। शिवमूर्ति जी ने ग्रामीण जीवन का यथार्थ खासकर आजादी के बाद के गांव का यथार्थ बहुत प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है। शिव मूर्ति ने जिस तरह से अवध अंचल के यथार्थ को चित्रित किया है उसी तरह छत्तीसगढ़ के लोग जीवन के दुख दर्द को चित्रित करने के लिए छत्तीसगढ़ को शिवमूर्ति की तरह के रचनाकार का इंतजार है।

कथाकार श्री शिवमूर्ति जी ने 'सिरी उपमा जोग' शीर्षक कहानी का पाठ किया। कहानी के पाठ से कथावस्तु खुलता गया। उसमें स्त्रियों की दशा, आर्थिक आत्मनिर्भरता के अभाव में पर निर्भरता, परिवार और समाज का भय जैसी बहुत सी बातें उभर कर आयीं जिसे श्रोताओं ने पूरे मनोयोग से सुना। कहानी पाठ के बाद शिवमूर्ति जी ने कहा कि जब तक स्त्रियां शिक्षित, आत्मनिर्भर तथा न्याय के लिए संगठित नहीं होंगी, उनकी दशा नहीं सुधर सकती।

विद्यार्थियों ने कहानी के प्रति अपनी जिज्ञासा के बहुत से सवाल शिवमूर्ति जी से पूछे,जिनका उन्होंने विस्तार पूर्वक उत्तर देते हुए कहा कि रचना देखने सुनने से बनती है। हम समाज के हर वर्ग के लोगों की बातें कान लगाकर सुने तथा स्थितियों को खुली आंखों से देखें, यही रचना प्रक्रिया है।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों के अलावा दुर्ग भिलाई के प्रतिष्ठित साहित्यकार लोकबाबू, कैलाश बनवासी, शरद कोकसि धनश्याम त्रिपाठी, अजय साहू, अंजन कुमार तथा विभाग के प्राध्यापक डॉ कृ

ष्णा चटर्जी, रजनीश उमरे, सरिता मिश्र ओमकुमारी देवांगन एवं महाविद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक प्रोफेसर ए.के. खान उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ रजनीश उमरे ने तथा आभार प्रदर्शन प्रो. थानसिंह वर्मा ने किया।

प्राचार्य

शास.वि.या.ता. स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग (छ.ग.)

दिनांक **17.10.2022**

प्रतिवेदन हिंदी साहित्य परिषद का गठन

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग के हिंदी साहित्य परिषद का गठन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में अंचल के प्रसिद्ध कवि श्री शरद कोकास उपस्थिति थे, कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह के की। दीप प्रज्वलन एवं अतिथि स्वागत के पश्चात स्वागत भाषण देते हुए हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने अतिथियों का स्वागत करते हुए हिंदी साहित्य परिषद के मनोनीत पदाधिकारियों एवं सदस्यों के नाम की घोषणा की। मनोनीत पदाधिकारियों में अध्यक्ष मोनिका साहू, उपाध्यक्ष रंजना साहू सचिव गरिमा कहार, सहसचिव ओमप्रकाश के साथ कार्यकारिणी सदस्य के रूप में अक्षय चौरसिया, पद्मनी कौशिक, प्रीति देवांगन, पूनम, त्रिलोचन साहू, मोहम्मद सारिक अहमद, कौशल, भूषण रावटे, दीपिका साहू, मीणा, खिलेश्वरी, दौलत निर्मलकर, सोनल ताम्रकार के नामों की घोषणा की गई।

मुख्य अतिथि की आसंदी से बोलते हुए कवि शरद कोकास ने कहा कि कम्प्युटर और मोबाइल में हिन्दी के प्रयोग का इतिहास बताते हुए कहा कि मोबाइल पर अब नए तरह के ऐप्स और की बोर्ड आ गए हैं जिनसे अब हिन्दी लिखना न केवल आसान हो गया है बल्कि हिन्दी में पॉडकास्टिंग, ब्लोगिंग आदि का उपयोग करते हुए विभिन्न ऐप्स के माध्यम से धन भी कमाया जा सकता है। उन्होने कहा कि सोशल मीडिया अब केवल चौट करने के लिए नहीं उपयोग में लाया जाता बल्कि इसके माध्यम से संगठन के भी काम होते हैं लेकिन गलत फेक और सही खबरों में हमे अंतर करना जरूरी है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.आर.एन. सिंह ने कहा कि हिंदी आज महत्वपूर्ण भाषा है विद्यार्थी इसे भाषा के रूप में ही जानते हैं जबकि हिंदी आज यह रोजगार की भी भाषा है। इस तथ्य से विद्यार्थियों को अवगत होना होगा कि हिंदी आज रोजगार की प्रमुख भाषा है।

उक्त संपन्न कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. जयप्रकाश, प्रो. थान सिंह वर्मा, डॉ. अन्नपूर्णा महतो, डॉ. रजनीश उमरे, डॉ. सरिता मिश्र, डॉ. ओमकुमारी देवांगन के साथ बडी संख्या में महाविद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में डॉक्टर बलजीत कौर ने आभार व्यक्त किया तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ. कृष्णा चटर्जी द्वारा किया गया।

प्राचार्य

शास.वि.या.ता. स्नात. स्वशासी महावि. दुर्ग (छ.ग.)

दिनाँक **17/01/2023**

प्रतिवेदन

प्रगतिशील साहित्य मानवीय न्याय पूर्ण व्यवस्था का पक्षधर है- डॉ रमाकांत श्रीवास्तव

जहां मतलब निकल रहा हो वहां भावुकता और अनावश्यक होने पर कहर निरंकुश हो जाओ यही पूंजीवाद है। पूंजीवाद हमारी हर पवित्र वस्तु को नष्ट कर देता है, मनुष्य को अमानवीय बना देता है। मनुष्य और मनुष्य के बीच विभेद पूंजीवादी व्यवस्था की देन हैं। गरीबी ईश्वर की कोई योजना नहीं है यह शोषक व्यवस्था की उपज है। मार्क्स ने समाजवाद की बात की जहां अमीरी और गरीबी के भेद को मिटाया जा सकता है। प्रगतिशील साहित्य मानवीय न्यायपूर्ण व्यवस्था का पक्षधर है। उक्त विचार शासकीय विश्वनाथ यादव तमस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी का प्रगतिशील साहित्य विषय पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ रमाकांत श्रीवास्तव व्यक्त किया।

उन्होंने आगे कहा कि एक-दो व्यक्ति का साथ प्रगति नहीं है, बल्कि उस विचार की बहुत सी कड़ियां बनती हैं, जुड़ती चली जाती हैं, तब परंपरा बनती है। मूल्यवान विचार पहले से चले आ रहे हैं। धर्म का सारतत्व और धर्म के पाखंड को समझने के लिए उपनिषद की कहानियों को पढ़ना चाहिए। प्रश्नों का दौर पहले से चला आ रहा है। गार्गी का जिज्ञासु होना, राजा राममोहन राय का सतीप्रथा व बाल विवाह का विरोध, विद्यासागर का विधवा विवाह का पक्ष लेना, ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले का महिला शिक्षा के लिए बालिका विद्यालय खोलना । भूखे को धर्म ग्रंथ परोसकर उसका अनादर किया जाता है विवेकानंद जी द्वारा धर्म के ऐसे पाखंड का विरोध विवेकवादी परंपरा का सूचक है। मुक्तिबोध का स्मरण करते हुए कहा कि लेखक के समक्ष विषय की कमी नहीं है, समस्या केवल उसके चुनाव का है। आज हमारे समक्ष सामंती, पूंजीवादी, साम्राज्यवादी व्यवस्था के साथ-साथ सांप्रदायिक फासीवाद एक बड़ी चुनौती है. बहुराष्ट्रीय कंपनियों की लूट बड़ी समस्या है। लेखक को भावुक होना चाहिए।

लेखक जनता से शक्ति लेकर उनके पक्ष लिखकर क्रूर व्यवस्था का विरोध कर सकता है। डॉ. बसंत त्रिपाठी ने कहा कि प्रगतिवाद के संबंध में बहुत से लेखकों विचारकों ने भांति पैदा की है, वे कहते हैं कि प्रगतिवादी विचारों की जड़ें पाश्चात्य जमीन की देन है, यह सहीं नहीं है। वैश्विक मंदी के बाद मुसोलिनी और हिटलर जैसे फासिस्ट तानाशाही उभार सामने आया इसके विरोध स्वरुप फ्रांस में **1935** में बुद्धिजीवियों की सभा हुई। जिसमे मुल्कराज आनंद और सज्जाद जहीर सम्मिलित हुए तथा उससे प्रेरणा लेकर भारत में **1936** में प्रेमचंद की अध्यक्षता में भारत में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना की जिसको विश्वकवि रवींद्रनाथ टैगोर का भी आशीर्वाद मिला। भारत की जनता उस समय अंग्रेजी सामाज्यवाद तथा सामंतवादी व्यवस्था से स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत थी। प्रेमचंद, निराला जैसे लेखक इस संघर्ष से जुड़कर रचनाकारों की अगुवाई कर रहे थे। यही परंपरा छायावाद के बाद प्रगतिवाद के रूप में विकसित हुई। केदार, त्रिलोचन, नागार्जुन, शमशेर, मुक्तिबोध इसी परंपरा में आते हैं। इसे साहित्य ही नहीं, बल्कि कला की अन्य विधाओं में भी आत्मसात किया गया आज प्रगतिवादी चेतना ही रचनात्मकता की मुख्य धारा है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रभारी प्राचार्य डॉक्टर राजेंद्र चौबे ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज जब शोषित पीड़ित वर्ग की समस्या को सामने लाने वालों को डराने धमकाने का प्रयास किया जा रहा है ऐसे में युवाओं की महती जवाबदारी है। सकारात्मक बदलाव के साथ आगे बढ़ाना वर्तमान चुनौतियों से भरा है। हमारे लेखक समाज की इन चुनौतियों को स्वीकार करते हुए जन चेतना पैदा कर रहे हैं, हम उनका अभिनंदन करते हैं।

कार्यक्रम आरंभ में अभिनेष सुराना ने स्वागत उद्‌बोधन के साथ विषय प्रवर्तन किया। डॉ जयप्रकाश ने अतिथि वक्ताओं का परिचय देते हुए कहा- डॉ रमाकांत श्रीवास्तव और डॉक्टर बसंत त्रिपाठी का छत्तीसगढ़ से निकट संबंध है। रमाकांत श्रीवास्तव और बसंत त्रिपाठी अपने ढंग के विशिष्ट कथाकार हैं उनकी अपनी विशिष्ट शैली व पहचान है।

कार्यक्रम में दुर्ग भिलाई के साहित्यकार शरद कोकास, लोकबाबू, डॉ. शंकर निषाद, डॉ. अरविंद शुक्ला, विभाग के प्राध्यापक बलजीत कौर, डॉ. कृष्णा चटर्जी, अन्नपूर्णा महतो, डॉ. ओम कुमारी देवांगन, डॉ. किरण शर्मा, डॉ. सरिता मित्र, प्रियंका यादव के साथ बड़ी संख्या में शोध छात्र एवं विद्‌यार्थीगण उपस्थित थे कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर रजनीश उमरे तथा आभार प्रदर्शन प्रोफेसर थानसिंह वर्मा ने किया।

दिनांक **11/02/2023**

प्रतिवेदन

पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने की आवश्यकता है- डॉ. सिंह

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्‌यालय, दुर्ग में हिन्दी विभाग के तत्वावधान में "साहित्य और पठनीयता की चुनौती" विषय पर डॉ. उषा कनक पाठक (मिरजापुर उत्तर प्रदेश) का व्याख्यान आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. उषा कनक पाठक ने अपने व्याख्यान में कहा कि साहित्य के समक्ष उसकी पठनीयता एक बड़ी चुनौती है। साहित्य का संबंध सर्वहित से है जो सबके कल्याण के लिए होता है। यह धारा आज भी प्रवहमान है पर आज सत्साहित्य के अध्येता कम होते जा रहें हैं। इसका कारण विषय एवं भाषागत् जटिलता बताई जाती है किन्तु यह सही नहीं है। उन्होनें आगे कहा की साहित्य की समझ संस्कार से पैदा होती है। पुराने समय में यह संस्कार बच्चों को घर परिवार से मिला करता था जहां धार्मिक ग्रंथों के साथ बालबोध की कहानियों, दादी-नानी के किस्सों के बीच ही बड़े होते थे। आज एकल परिवार और जिन्दगी की भाग-दौड़ में यह सब पीछे छूट गया और उनकी जगह डिजिटल मीडिया और मोबाईल ने ले लिया है। आज बच्चा पुस्तक पढ़ने के बजाय मोबाईल उठाता है। इसलिए उनमें क्या अच्छा है और क्या बुरा है इसका विवेक पैदा नहीं हो पाता। साहित्य से दूर होते जाने के कारण आज समाज में दया, करूणा का स्थान घृणा तथा हिंसा ने ले लिया है। व्याख्यान के उपरांत विद्‌यार्थियो में जिज्ञासावश अनेक सवाल किये जिसका उत्तर डॉ. पाठक ने बहुत सहजता से दिया।

अपने अध्यक्षीय उदबोधन में प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने कहा- पठन-पाठन को बालकित करने का कार्य एक छोटे से यंत्र ने कर दिया है इसलिए हमारी नयी पीढ़ी के समक्ष पठन-पाठन एक समस्या बनती जा रही है। आज विद्यार्थी अच्छी किताबें पढ़ने से कतराने लगे है, इसलिए उनमें चिंतन का अभाव है, यह स्थिति समाज और राष्ट्र के लिए भी एक बड़ी चुनौती है। आज पुस्तक संस्कृति को फिर से बढ़ावा देने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का आरंभ सरस्वती वन्दना तथा स्वागत गान से हुआ। तत्पश्चात् अतिथियों का स्वागत किया गया। विभाग के अध्यक्ष डॉ. अभिनेष सुराना ने अपने स्वागत भाषण में कहा आज साहित्य के प्रति पाठकों की उदासीनता एक बड़ी समस्या है इसलिए साहित्य की पठनीयाता संबंधी चर्चा न केवल मौलिक है बल्कि प्रासंगिक भी है। कार्यक्रम में डॉ. जगजीत कौर सलूजा, अध्यक्ष भौतिक शास्त्र विभाग एवं विभाग के प्राध्यापकों के अलावा बढी संख्या में विद्यार्थीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कृष्णा चटर्जी ने तथा आभार प्रदर्शन प्रो. थानसिंग वर्मा ने किया।

प्राचार्य

शास.वि.या ता. स्नात.स्व. महावि.दुर्ग (छ.ग.)

दिनांक **21.02.2023**

हिन्दी विभाग

प्रतिवेदन - मातृभाषा दिवस

सांस्कृतिक विविधता को बचाये रखने मातृभाषा आवश्यक है - डॉ. सुराना

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग के हिंदी विभाग द्वारा **21** फरवरी को विश्व मातृभाषा दिवस के अवसर पर मातृभाषा पर वैचारिक आयोजन किया गया। इस वैचारिक आयोजन में हिंदी विभाग के अलावा अन्य विभाग के प्राध्यापकों के साथ स्नातकोत्तर हिंदी के विद्यार्थियों की सहभागिता रही। कार्यक्रम के प्रारंभ में हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ अभिनेष सुराना ने अपने आधार वक्तव्य में कहा कि अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने का उद्देश्य संसार में उपलब्ध बोली, भाषाओं और सांस्कृ तिक विविधता को बढ़ावा देना है। अर्थशास्त्र की प्राध्यापिका डॉ पद्मावती ने अपनी मातृभाषा तेलुगु के भाषा वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि तेलुगु भाषा में संस्कृत शब्दों की बहुलता है। उन्होंने उदाहरण स्वरूप तेलुगु भाषा की राम-कथा का सस्वर पाठ किया तथा उसकी व्याख्या की। संस्कृत के प्राध्यापक जनेंद्र दीवान ने संस्कृत साहित्य के कवि भर्तृहरि द्वारा वर्णित वैराग्य शतक के श्लोक का पाठ करते हुए कहा कि मात्र वैरागी ही भय मुक्त होता है बैरागी के अलावा सभी भय-ग्रस्त होते हैं।

हिंदी की प्राध्यापिका डॉ. कृष्णा चटर्जी ने रविंद्र नाथ टैगोर की बांग्ला कविता का पाठ करते हुए कविता में निहित भाव की हिंदी व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि कवि अपनी श्रद्धा-निष्ठा ईश्वर को समर्पित करते हुए प्रार्थना करते हैं कि उनका जीवन अहंकार से मुक्त रहे। वरिष्ठ प्राध्यापिका डॉ बलजीत कौर ने सूफी कवि वारिश शाह के विरह आधारित अमृता प्रीतम की कविता का पाठ किया जिसमें अमृता प्रीतम ने वारिश शाह को आह्वान किया कि वे अपनी कब्र से उठकर विभाजन की त्रासदी से पीड़ित उन हजारों बेटियों के लिए भी गीत लिखें। डॉ. सरिता मिश्रा ने बाबा नागार्जुन की मैथिली कविता का पाठ किया जिसमें बाबा नागार्जुन रोजी रोटी के लिए गांव छोड़ते हुए मजदूर के दुख को व्यक्त किया है, जिसमें मजदूर गांव छोड़ते हुए धरती माता से क्षमा मांगते है, उन्हें प्रणाम करते हैं। प्रोफेसर थानसिंह वर्मा ने मातृभाषा एवं संस्कृति के महत्व को स्पष्ट किया। डॉ. किरण मिश्रा, डॉ. ओमकुमारी देवांगन एवं डॉ. रजनीश ने भी छत्तीसगढ़ी भाषा की कविताओं का पाठ करते हुए छत्तीसगढ़ी कविताओं में निहित सौंदर्य, प्रेम और संघर्ष की व्याख्या की।

स्नातकोत्तर के विद्यार्थी सारिक अहमद, विशु कुमार तथा नितिन वर्मा ने भी कविता का पाठ किया कार्यक्रम का समापन विद्यार्थियों द्वारा छत्तीसगढ़ी के राजगीत के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर ओमकुमारी देवांगन तथा आभार प्रदर्शन डॉ रजनीश उमरे ने किया।

प्राचार्य

शास.वि.या ता. स्नात.स्व. महावि.दुर्ग (छ.ग.)